61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 104

उड़ते धूल की बीच में

आज रात कुछ ज्यादा ही शांत है। सिराओं में ठंड से दर्द होने लगा है। उससे भी ज्यादा दर्द मेरे दिल में है। एक साल तो यूँ ही बीत गया था। मगर इस इंतज़ार के आखिरी पलों में दिल टूट रहा है। कहीं से ट्रेन आने की आवाज। उद्घोषिणी से पता चला की मेरा इंतेज़ार खतम नहिं हुआ। आखिर कबतक...
मेरे आशा खतम हो चुका था। 'मीरा बहन' पीछे से आवाज आई। मुड़कर देखा तब रोहित था। शायद वह दफ्तर से लौट रहा था। हाथ में बाग था। 'बहन आप किसका इंतेज़ार कर रही हैं', 'तुम्हारा भाई का और किसका?' यह सुनकर उसका मुस्कान गिर गया। वह मेरे पास आकर बैठा। 'भाभी भैया नहीं आने वाले, आप घर लौट जाइए।' मेरे दिल उतना सोच रह नहीं पाया आसमान और मेरी आँखें एक साथ साथ बरसे। सोचती हूँ की उसको कोई नई लड़की मिली होगी। मैंने रोहित से पूछा 'तुम मुझे भाभी क्यों बुला रहे हो, मेरे और

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

तुम्हारे भाई के शादी अब तक नहीं हुआ।
रोहित मुझसे उसके पीछे जाने की इशारा किया।
वह मुझे गाडी में बिठाकर घर ले जा रहा था।
मेरे मन के पुस्तक मेरे मने कई पन्ने पिछे
की तरफ पलटा। बारहवीं में पढ रही थी।
पापा के ट्रान्सफर के कारण शहर में नई आयी
थी। नया स्कूल, नया यूणिफोम, नये दोस्त, कुछ
पुराना था तो सिर्फ मैं। स्कूल बहुत बडा
था आँगन से लेकर क्लास रूम तक सब
चमक रहे थे। साइन्स पढना जितना कठिन
है, उतना मज़दार भी है। पूरे क्लास तरह तरह
के चित्रों से भरा था। लडके लडकीयाँ सब
पटाखे लग रहे थे। उनमें से एक चहरा, एक
मुस्कान मुझे अपने तरफ खिंचा। एक प्यारा
मुस्कान, वह मेरे पास आया। पूरे क्लास को
शाँत होने का इशारा किया। 'हाय, मैं बिस्मल यहाँ
का क्लास मोनिटर हूँ। अपना परिचय दो'।
मैं अपने बारे में कहने लगी 'सुप्रभात, मेरी नाम
मीरा ए एस था, सुनाई नहीं दिया' पिछे की बेंच

से कोई बोला। चुप रहो तो सुनाई देगा। पूरा क्लास शांत हो गया। इस एक बात से मुझे निर्मल का अधिकार समझ आ गया था। परिचय देने के बाद निर्मल मुझे एक स्थान दिया, मैं मैं बैठ गयी। नई क्लास में स्वागत हूँ। इसके बाद हम अच्छे दोस्त बन गये मिड टेर्म एक्साम के बाद मेरा मार्क बहुत कम था। निर्मल क्लास टोप था। उसे आँखों में देखकर बात करने में भी मुझे छिचक हो रही थी। मुझे घर से और बाहर से इस कम मार्क केलिए कोस रहे थे। दोस्त भी दूरियाँ बनाने लगे मन एक सुनसान बवडर में फस गया था। पाव के निचे से जमीन खींचा जा रहा था। अब तक अच्छे से पढ रहे थे अब नहीं कहकर कहीं बेमतलब लोग निकालने लगे। जीवन खतम करने का निर्णय ले ही लिया था। पर उसका भी हिम्मत नहीं था। मुझे माँ-पापा से सब कहकर रोना था, पर वह भी नहीं कर पाई। एक दीन में स्कूल में अकेली बैठी

थी। मेरे क्लास के कुछ लड़के मेरे पास आकर पूछा 'क्या तुम दुःखी हो।' 'हाँ', हमारे पास एक दवा है जो दुःख मिटाता है। इनहोंने स्कूल के बीच में एक मैदान है वहाँ मुझे ले जाने लगा। पर असल में वे मुझे नशा देना चाहते थे। निखिल पहले ही कहीं से ये सुन लिया था और वह दौड़कर आया और मुझे बचाया। "तुम क्या कर रही हो?" "मैं..." "हाँ, आगे बोलो" "वह मुझे दवा देने वाले थे" "कौनसी दवा" "दुःख मिटाने की" "रे गधे वह तुम्हें नशा दे रहे थे।" "तो क्या, दुःख नहीं होता न" "अब तुम्हें इतना बड़ा कौनसा दुःख है" "तुम क्या जाने मेरा दुःख, मैं बुधू हूँ, सब मुझे छोड़कर चले गये, सब केलिए मैं बोझ हूँ। मुझे कोई प्यार नहीं करता मुझे मरना है"। वह चुप रह गया था। उसने मुझे गले से लगा लिया मेरे मन शाँत होने तक मैं रोयी। जब मैं शाँत हुआ उसने मुझे समझाया "अगर मार्क कम है तो पढ़ना चाहिए मरना नहीं पढ़ने में मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" वह मेरे घर आया

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 104

मेरे माँ पापा से बात की। पहले सोचा था की वे मुझे डाटेंगे पर जब मेरे हालात समझ आया वह रो पड़े मुझे गले से लगाया। मुझे पढने का प्रोत्साहन देते हुए हर वक्त वह मेरे साथ थे। जब अगली परीक्षा आयी तब हर विषय में मुझे और निरमल दोनों को पूरे संख्या थे। कोलेज अडमिशन बुलाया तब मुझे पता नहीं था आगे क्या करना है। निरमल वहाँ भी मदद किया लाइन्स लिखा दिल्ली मेडिकल कोलेज में अडमिशन मिला। निरमल एंजिनीरिंग पास हुआ। एक दिन माँ का फोन आया बोला "बेटी देखो निरमल के यहाँ से शादी का रिश्ता आया है, तुम्हारा राय क्या है" "हाँ कह दीजिए"। मैंने आँखें बंद करके कह दिया। सावन का माह था। मुझे खत आया की निरमल को सेना में नौकरी मिली है जाने से पहले उसको मुझे देखना है। मेरे लिए वह घंटों तक इंतज़ार किया पर मैंने पहुँचने में देरी कर दी

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 104

इस दिन से अब तक मैं यही इस स्टेशन पर इंतजार करती हूँ। पर रेलगाडी के आने की धूल से मेरे आँखें कमज़ोर हो गयी होगी दस साल में एक बार भी वह मुझे मिला नहीं। रोहित की होर्न बजाने से मेरा दिल वापस आ गया। स्वबोध तो सालें पहले खो चुकी थी। 'दीदी तुम कहाँ थी' माधव दर्वाजा खोलते हुए पूछा 'वहाँ पर जहाँ मेरा दिल है'' थक गयी होगी आ जरा खाना खाले।' माँ रसोई से पुकारा 'नहीं भूक मर गयी' मैंने बोला। उपर की कमरे में गया पूरा याद था। उसको निहारते हुए मुझे निरमल का याद आता है। विरह से बड़ा पीड़ा क्या है। ये दुनिया सुनसान लगने लगा। सारा कमरा मेरे चित्रों से भरा था। मेरा दिमाग में सिर्फ अंधकार था। रात में गला सूखने लगा। मैं सिडीयों से उतरकर पानी पीने केलिए फ्रिड्ज की ओर चली। बगल वाली कमरे से माँ और माधव का आवाज आया 'आखिर कब तक वह इंतेजार करेगी'

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

'माधव तो क्या हम सच बता दे।' "और नहीं तो क्या दस साल से वह अपना ज़िन्दगी खराब कर रही है' 'पर अगर हम बता देंगे तो वह टूट जायेगी' 'पर हम उसे इस तरह तड़पते तो नहीं देख सकता ना' 'चुप रहो ~~वह~~ वह सुन लेगी'' ~~बच~~ बताना तो पड़ेगा ~~औ~~ जीसका वह इंतेजार कर रही है वह अब लौटने वाला नहीं।'' 'तो तुम्हारी बहन का हालत क्या होगा' 'इससे तो बहतर होगा। क्या बताना है उसे' 'यही की सात साल पहले युद्ध में निरमल मर गया था'। मेरा सर घूमने लगा। मेरा दुनिया टूट गया। मेरे सारे आशा जल गये। कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। जैसे तैसे में कमरे में पहुँची एक बार उसने मेरा जीवन बचाया था। इसलिए मरने का मन नहीं कर रहा था। अचानक मैं बेहोश होगयी। रात में कमरे की दरवाजा धड़ धड़ाने की आवाज से मैं जग गयी। मैं दर्वाजा खोला तो नीरमल खड़ा था। वह उसके पीछे चलने

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 104

इशारा किया मैं उसका पीछा कर रही थी। न जाने कितनी दूर चला पर रेलवे स्टेशन नज़र आया। मैं चलते चलते प्लाटफोरम तक पर पहुँच गयी। निरमल वहीं खड़ा था। मैं दौड़कर उसके पास गया उसे गले लगाया। मुझे छोड़के मत जाओ, तुम कहाँ था? और कितने देर मैं ~~इंतज़~~ इंतज़ार करूँ तुम्हारा मत जाना अब।" पर उसने उत्तर नहीं दिया खाली धूल में लुपत हो गया। रेलगाड़ी आकर रुकने की आवाज आयी। बारह बज रहा था। धूल का एक मेघ मुझे घेर रहा था। कई लोग मुझे देख रहें थे। भीड़ में माधव माँ और पापा खड़े थे। माँ रो रहीं थी। पापा ~~की~~ के चहरा भी काला हो गया था। माधव भी आश्चर्यचकित हो गया था। माँ माधव से कहा "माधव बेटा गाड़ी निकालो ~~दिदिब~~ दीदी बिमार है अस्पताल लेके ~~जा~~ जाना पड़ेगा।"

———.

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)